

राष्ट्रवादी इतिहासलेखन (Nationalist Historiography in India)

♦ 1. पृष्ठभूमि

ब्रिटिश उपनिवेश काल में भारतीय इतिहास को औपनिवेशिक दृष्टि से लिखा गया —

भारतीयों को “असंगठित” और “असभ्य” बताया गया।

इस प्रतिक्रिया में उभरा राष्ट्रवादी इतिहासलेखन, जिसने भारत के गौरवशाली अतीत को पुनर्स्थापित करने का प्रयास किया।

♦ 2. प्रमुख इतिहासकार

के. पी. जयसवाल – Hindu Polity

आर. सी. मजूमदार, हरप्रसाद शास्त्री, सूर्यकांत शास्त्री

विनायक दामोदर सावरकर – 1857: The War of Independence

♦ 3. विशेषताएँ

भारतीय सभ्यता की सांस्कृतिक एकता पर बल।

विदेशी आक्रमणों के विरुद्ध राष्ट्रीय प्रतिरोध को गौरवपूर्ण रूप में दिखाना।

इतिहास को राष्ट्रनिर्माण के उपकरण के रूप में देखना।

♦ 4. आलोचना

राष्ट्रवादी इतिहासलेखन में कभी-कभी भावनात्मकता और अतिशयोक्ति देखी जाती है।

फिर भी, इसने भारतीय इतिहास की राष्ट्रीय चेतना को जगाया।